मणिबेन वल्लभभाई पटेल

(31.10.1875 - 15.12.1950)

(कृपया इसका प्रिंट निकलवा कर पढ़ें, पढ़वाएं तथा बच्चों से नाट्य मंचन भी करवाने की कोशिश करें)

लेखक: आयुष सिंह
सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ(उ.प्र.), दिनांक : 31.10.2020
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
संपादन : ए. के. सिंह
मोबाइल : 7355175480

(सेट की प्रॉपर्टी : सेट पर बाई ओर कुर्सी-मेज, दाईं ओर केवल कुर्सी और बीच में पीछे की ओर एक गद्दा उस पर सफेद चादर और एक चरखा रखा हुआ है सूत कातने वाला। : नाटक की शुरुआत, पर्दा खुलता है, लाइटिंग के साथ, गोलियों और तोपों की गड़गड़ाहट के बीच नवजात शिशु के रोने की आवाज आती है और आवाज रुकने पर - जन्म गीत शुरू हो जाता है -

जुग जुग जियो हो ललनवा भावना के भाग जागे हो..... ललना.....)

(एकल अभिनेत्री अनामिका सिंह का पिछले दरवाजे की तरफ से प्रवेश और चित्र पर माला चढ़ाना)

आप सभी को भारत के लौह पुरुष वल्लभभाई पटेल के जन्मदिवस पर बहुत-बहुत बधाई। आज हम लोग पटेल जी का 145 वां जन्मदिन मनाने के लिए इकट्ठे हुए हैं।

वल्लभभाई पटेल का जन्म नाडियाड गुजरात में हुआ था। वे झवेरभाई पटेल एवं लाडवा देवी की चौथी संतान थे। सोमाभाई, नरसीभाई, विट्ठलभाई उनके बड़े भाई थे।

वल्लभभाई पटेल जी ने मैट्रिकुलेशन परीक्षा में अपनी जन्मतिथि 31 अक्टूबर 1875 दर्शाई है। वल्लभभाई पटेल गुजरात राज्य के ग्रामीण इलाके में पले बढ़े। वे गुजरात के लेवा पटेल पाटीदार समुदाय से संबंधित थे । लेकिन जब उनकी प्रसिद्धि बढ़ी, तो लेवा और कडवा पटेल, दोनों समुदाय उनको अपने से संबंधित होने का दावा करते थे।

वल्लभभाई पटेल नाडियाड, पेटलाद और बोरसाद के स्कूलों में दूसरे लड़कों के साथ खुद की मेहनत से पढ़े। और बहादुर तो वह इतने थे, कि एक बार उनके दर्दनाक फोड़ा हो गया था जिसे उन्होंने खुद फोड़ लिया था। जबकि नाई यह काम करने में घबरा रहा था।

22 की उम्र के आसपास वल्लभभाई पटेल ने मैट्रिकुलेशन पास किया। घर के बड़े बुजुर्गों के विचार थे, कि यह कहीं नौकरी वौकरी कर लेगा। और कोई खास बड़ा मुकाम नहीं बना पाएगा। उन्होंने स्वयं वकील बनने की पढ़ाई शुरू की। काम करके पैसे बचाए, जिससे वह लंदन जा सकें और बैरिस्टर बन सकें। वल्लभभाई पटेल ने कई साल अपने परिवार से दूर बिताए। दूसरे वकीलों से क़िताबें मांग कर पढ़ाई की और 2 साल के अंदर परीक्षा पास कर ली। अपनी पत्नी झवेरबा को उसके माता-पिता के घर से लाकर गोधरा में अपनी घर गृहस्ती बसाई।

वल्लभभाई पटेल जो सरदार पटेल के नाम से लोकप्रिय थे, भारत के पहले उप प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया। आप एक अधिवक्ता और राजनेता थे। जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एक वरिष्ठ सदस्य और भारतीय गणराज्य के संस्थापक पिता थे। उन्होंने स्वतंत्रता के संघर्ष में अग्रणी भूमिका निभाई। भारत और अन्य जगह पर लोग उन्हें अक्सर हिंदी, उर्दू और फारसी में सरदार कहा करते थे, जिसका अर्थ होता है प्रमुख। उन्होंने उन्नीस सौ सैंतालीस (1947) में भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान गृहमंत्री के रूप में कार्य किया।

जो शरणार्थी दिल्ली और पंजाब में पाकिस्तान से भाग कर आए थे, उनके लिए राहत का इंतजाम किया। जिससे शांति और अमन का माहौल कायम हुआ। उनका विशिष्ट काम था, भारत का एकीकरण करना। जिससे एक नया आजाद भारत देश बना। जिसमें ब्रिटिश उपनिवेश के भारतीय देशी रियासतों को सम्मिलित किया गया।

कुल 565 रियासतों को अंग्रेजी अधिपत्य से छुड़ाया गया। भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 के अंतर्गत मिलिट्री ताकत की धमकी देकर सरदार पटेल ने सभी देशी रियासतों को भारत में सम्मिलित होने के लिए मनाया। इसीलिए लोग उन्हें सम्मान से भारत का लौह पुरुष भी कहते हैं।

ये लो...मैंने सा...री भूमिका बांध दी और आप लोगों को अभी तक यह भी नहीं बताया, कि मैं कौन हूं और सरदार वल्लभभाई पटेल के बारे में इतनी जानकारी कैसे रखती हूं। तो मैं हूं

अनामिका सिंह। आप लोग तो मुझे पहचानते ही हैं । तो आज मैं सरदार वल्लभभाई पटेल की इकलौती बेटी मणिबेन पटेल का किरदार निभाने जा रही हूं। तो मैं पप्पा के बारे में अर्थात पटेल जी के बारे में आपको बहुत सी जानकारी दूंगी। और साथ में अपने बारे में भी कुछ बताऊंगी।

मेरा जन्म 3 अप्रैल 1903 को गुजरात राज्य के बोरसद गांव, खेड़ा जिले में हुआ। जिसे अब आणन्द जिला कहा जाता है। मेरे पिता सरदार वल्लभभाई पटेल भारत के महान नेताओं और देशभक्तों में से एक थे। मेरी मां का नाम झबेरवा था। जब मैं 7 साल की थी, तभी मेरी मां का निधन हो गया। मेरा एक छोटा भाई भी है, जिसका नाम दहिया भाई है। अतः उसके पालन पोषण का दायित्व बाल्यकाल से मेरे ही ऊपर आ पड़ा।

परिवार के सदस्यों ने पापा को बहुत समझाया, कि वह पुनर्विवाह कर लें। परंतु दृणमन वाले सरदार वल्लभभाई पटेल बोले, "मैं विमाता का दु:ख अपने बच्चों के ऊपर नहीं डालना चाहता"। उसके बाद आजीवन माता और पिता का दायित्व पप्पा ने ही निभाया। मां की मृत्यु के 1 वर्ष बाद ही पापा को पढ़ने के लिए विदेश जाना पड़ गया। अतः उन्होंने हम लोगों को बड़े पापा विट्ठलभाई के पास भेज दिया। तब बड़े पापा मुंबई में निवास करते थे। मुंबई में अंग्रेजी भाषा के क्वीन मैरी विद्यालय में मेरी पढ़ाई आरंभ हो गई। परंतु मुंबई महानगर के वातावरण में मां अस्वस्थ रहने लगी थी। वैद्यों के औषध देने के बाद भी उनके स्वास्थ्य में कोई परिवर्तन न हुआ। शायद पिता के वियोग में उनकी स्थिति ऐसी हो गई थी।

1909 में मुंबई के एक अस्पताल में कैंसर के इलाज के लिए मां को भर्ती कराना पड़ा। और इलाज सफल होने के बावजूद उनकी अस्पताल में ही मृत्यु हो गई। पटेल जी को इस बात की खबर कोर्ट में एक गवाह के क्रॉस एग्जामिनेशन के समय लगी। लोगों के अनुसार पटेल जी ने नोट को पढ़ा, जेब में रखा, क्रॉस एग्जामिनेशन पूरा किया और केस जीत लिया। आपने दूसरे लोगों को भी मृत्यु की खबर कार्रवाई के बाद बताइ। जब उन्हें प्लेग की बीमारी हुई, तो उन्होंने अपने परिवार को सुरक्षित जगह भेज दिया, और खुद घर छोड़कर नाडियाड में अकेले रहने लगे।

कई साल पैसे बचाने के बाद पटेल जी बहुत बड़े वकील बने। जब उन्होंने लंदन की यात्रा के लिए टिकट और पास के लिए अप्लाई किया, तो वे टिकट और पास वी. जे. पटेल के नाम से उनके बड़े भाई विट्ठलभाई पटेल के घर पर आया। क्योंकि वी जे और वी जे नाम एक

जैसे लगते थे। जिसका मतलब था, विट्ठलभाई झाबिरभाई पटेल और वल्लभभाई झावेरभाई पटेल। विट्ठलभाई का भी एक समय लंदन में पढ़ने का बहुत मन था। तो परिवार ने वल्लभभाई पटेल को समझाया, कि अगर छोटा भाई बड़े भाई से पहले जाएगा तो समाज में घर की मर्यादा के लिए अच्छा संदेश नहीं जाएगा। इसलिए अपने परिवार का सम्मान बचाने के लिए विट्ठलभाई को अपनी जगह जाने की सहमति दे दी।

बाद में 36 की उम्र में वे लंदन गए और मिडिल टेंपल इन में अपना नामांकन करवाया। और 36 महीनों के कोर्स को 30 महीने में ही पास कर लिया और अपनी क्लास में टॉप भी किया। जबकि इससे पहले उन्होंने कोई भी कॉलेज अटेंड नहीं किया था।

भारत वापस आने पर पप्पाजी अहमदाबाद में बस गए और शहर के सबसे बड़े बैरिस्टर बने। वे अपने अच्छे स्वभाव और व्यवहार के लिए जाने जाते थे। उन्होंने अपने बड़े भाई के साथ आपसी समझौता किया, कि वह अहमदाबाद में परिवार को संभालेंगे और उन्हें राजनीति में घुसने के लिए समर्थन देंगे।

स्वतंत्रता आंदोलन में सरदार पटेल का सबसे पहला और बड़ा योगदान खेड़ा संघर्ष में हुआ। गुजरात का खेड़ा डिवीजन उन दिनों भयंकर प्लेग और सूखे की चपेट में था। किसानों ने अंग्रेजी सरकार से भारी करों में छूट की मांग की। क्योंकि गांधीजी चंपारण आंदोलन में व्यस्त थे, इसलिए खेड़ा में संघर्ष के नेतृत्व के लिए पटेल जी को जिम्मेदारी मिली। पटेल जी ने गांव-गांव में जाकर लोगों की दिक्कतें जानी और लोगों को एकता और अहिंसा के लिए प्रेरित किया। इस संघर्ष के दौरान सरकार ने लोगों को डराने के लिए पुलिस भेजी और उनकी जमीन और सामान को जब्त कर लिया गया। बहुत से कार्यकर्ता और किसान गिरफ्तार हुए, परंतु पुलिस पापा जी को गिरफ्तार करने में नाकाम रही। बाद में सरकार पटेल जी के साथ बातचीत करने के लिए मान गई और एक साल के लिए टैक्स माफ कर दिया। सरदार पटेल की यह पहली सफलता थी।

उसके बाद खेड़ा, बोरसाद और बारदोली के किसानों के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ बड़ा आंदोलन किया। जिससे वे गुजरात के सबसे प्रभावी नेता बने। और फिर अपने समर्थकों के कहने पर पटेल जी राजनीति में घुस गए। गांधी जी से मुलाकात के बाद पटेल जी में मौलिक रूप से बदलाव आया। और आजादी की लड़ाई में जुट गए। सितंबर उन्नीस

सौ सत्रह (1917) में पटेल जी ने भाषण देते समय भारतीयों को प्रोत्साहित किया, कि वे सब स्वराज्य की लड़ाई में गांधीजी का साथ दें।

पटेल जी ने गांधी के असहयोग आंदोलन में साथ दिया और गुजरात राज्य का दौरा करके आंदोलन में 3 लाख लोग जुड़े और 15 लाख रुपए इकट्ठा किए। गुजरात में शराबबंदी, छुआछूत, जातीय भेदभाव और महिला सशक्तिकरण पर काफी काम किया। 1922, 1924, 1927, में पटेल जी अहमदाबाद नगरपालिका के प्रेसिडेंट चुने गए। प्रेसिडेंट रहते हुए बिजली, जल-निकासी, स्वच्छता और स्कूलों के लिए काफी काम किया।

नागपुर और बारदोली में भी प्लेग, सूखा, और टैक्स के लिए सत्याग्रह चलाया। अपनी बातचीत की कुशलता की वजह से बारदोली की औरतें उन्हें सरदार कहकर बुलाती थीं।

दांडी जुलूस के समय पापा गांधी जी के साथ गिरफ्तार हुए। छूटने के बाद कांग्रेस के 1931 के अधिवेशन में अध्यक्ष चुने गए। लंदन की गोलमेज परिषद में असफल होने के बाद 1932 में पटेल जी और गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया। और दोनों को यरवदा जेल में कैद कर दिया। यहां पटेल जी और गांधीजी में करीबी बढ़ी। यरवदा जेल में पटेल जी ने गांधी जी का बहुत ध्यान रखा। बाद में पटेल जी को नासिक जेल भेज दिया गया। सजा के दौरान अपने भाई के दाह संस्कार में शामिल होने के लिए सरकार ने अनुमति देने से इनकार कर दिया। जिससे उन्हें बहुत दु:ख पहुंचा। अंततः उन्हें 1934 में रिहा कर दिया गया।

दूसरे विश्व युद्ध के शुरू होने पर सी. राजगोपालाचारी ने ब्रिटेन को पूरा समर्थन देने का विचार रखा। अगर ब्रिटेन बदले में युद्ध समाप्ति के बाद भारत को आजादी देने का वचन दे। परंतु गांधी जी ने अपने अहिंसक विचारों के कारण इसे समर्थन नहीं दिया। अंग्रेजों को भारत से निकालने के लिए पप्पा भी गांधी के विचारों के साथ सविनय अवज्ञा आंदोलन से जुड़ गए। बाद में इस आंदोलन को कांग्रेस ने मंजूरी दे दी। लेकिन 9 अगस्त 1942 को पापा को गिरफ्तार कर लिया गया और तीन साल की सजा सुनाई गई। वे 15 जून 1945(पैंतालीस) को रिहा हुए। कैद के समय पप्पा मुझे पत्र लिखते रहते थे। मैंने भी उनका पूरी तरह से साथ दिया। क्योंकि उन्होंने अपना कर्तव्य देश के प्रति ईमानदारी से निभाया था।

इसी समय आजादी की बात चलने लगी थी। शर्त स्वरूप अंग्रेजों ने दो प्लान दिए :

१) पहली शर्त.... देसी राजा चाहे तो स्वायत्त रह सकते हैं और
२) दूसरी शर्त.... भारत-पाकिस्तान का बंटवारा।

दोनों में कुछ तो स्वीकार करना ही था। इसलिए वे भारत-पाकिस्तान बंटवारे के लिए पक्ष में रहे। फलस्वरुप अंग्रेजों ने कांग्रेस को सरकार बनाने का आमंत्रण दिया। और नेहरू को नेता मानते हुए उप प्रधानमंत्री, गृह, सूचना एवं प्रसारण विभागों की जिम्मेदारी संभाल ली।

यद्यपि अधिकांश प्रांतीय कांग्रेस समितियां पापा के पक्ष में थीं। लेकिन गांधीजी की इच्छा का आदर करते हुए पटेल जी ने प्रधानमंत्री पद की दौड़ से अपने को दूर रखा। और इसके लिए नेहरू का समर्थन किया। किंतु इसके बाद भी नेहरू जी और पटेल जी के संबंध तनावपूर्ण ही रहे। इसके चलते कई अवसरों पर दोनों ने ही अपने-अपने पद का त्याग करने की धमकी दे दी थी।

स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित नेहरू जी और उप प्रधानमंत्री सरदार पटेल जी में आकाश - पाताल का अंतर था। यद्यपि दोनों ने लंदन जाकर बैरिस्ट्री की डिग्री प्राप्त की थी। नेहरू प्राय: सोचते रहते थे, तब तक सरदार पटेल उसे कर डालते थे। उनमें बिल्कुल भी अहंकार नहीं था। पापा कहा करते थे- "मैंने कला या विज्ञान के विशाल गगन में ऊंची उड़ाने नहीं भरी। मेरा विकास कच्ची झोपड़ियों में, गरीब किसान के खेतों की भूमि में और शहरों की गंदी गलियों में हुआ है।"

इसी समय पाकिस्तान ने पूरा बंगाल और पूरा पंजाब मांगा। लेकिन अपनी सूझबूझ दिखाते हुए पाकिस्तान को इन दोनों राज्यों के बंटवारे के लिए मना लिया। इससे देश की आवाम में पटेल जी की स्वीकार्यता बढ़ी।

इसी समय देश में हिंसा और जनसंख्या पलायन का वातावरण बढ़ रहा था। पटेल जी ने राहत और खानपान के आयोजन का नेतृत्व किया। यहां तक कि सीमा पर जाकर पाकिस्तानी नेताओं के साथ शांति बनाए रखने की अपील भी की। मुस्लिमों, सिखों और हिंदुओं को समझाया, कि हिंसा न करें। नहीं तो मार काट सब तरफ से होगी। सबसे बड़ी उपलब्धि अमृतसर में मिली। जहां सभी धर्मों के नेताओं को समझाने के बाद शांति का माहौल कायम हुआ।

एक बार उन्होंने सुना कि बस्तर की रियासत में कच्चे सोने का बड़ा भारी क्षेत्र है। और इस भूमि को दीर्घकालिक पट्टे पर हैदराबाद की निजाम सरकार खरीदना चाहती थी। उसी दिन वे बेचैन हो उठे। उन्होंने अपना थैला उठाया, वी.पी. मैनन को साथ लिया और चल पड़े। वे उड़ीसा पहुंचे, वहां के 38 राजाओं से मिले। इन्हें सैल्यूट स्टेट कहा जाता था, यानी जब कोई उनसे मिलने जाता था, तो तोप छोड़कर सलामी दी जाती थी। पटेल जी ने इन राज्यों की बादशाहत को आखरी सलामी दी। इसीतरह से काठियावाड़ पहुंचे, वहां 250 रियासतें थी। कुछ तो केवल 20-20 गांव की रियासतें थी। सबका एकीकरण किया।

एक शाम वे मुंबई पहुंचे। आसपास के राजाओं से बातचीत की और उनकी राजसत्ता अपने थैले में डालकर चल दिए। उसके बाद पंजाब गए, पटियाला का खजाना देखा तो खाली था। फरीदकोट के राजा ने कुछ आनाकानी की, सरदार पटेल ने फरीदकोट के नक्शे पर अपनी लाल पेंसिल घुमाते हुए केवल इतना पूछा.... कि क्या मर्ज़ी है? राजा कांप उठा...और फिर खप्प...

आखिर में 15 अगस्त 1947 तक केवल तीन रियासतें : जूनागढ़, हैदराबाद और कश्मीर छोड़कर लौह पुरुष ने सभी रियासतों को भारत में मिला दिया था। इन तीन रियासतों में भी जब जूनागढ़ का नवाब पाकिस्तान भाग गया, तब उसे भी 9 नवंबर 1947 को भारत में मिला लिया गया।1948 हैदराबाद भी केवल 4 दिन की पुलिस कार्रवाई द्वारा मिला लिया गया। न कोई बम चला, न ही कोई क्रांति हुई, जैसा कि डराया जा रहा था। विश्व के इतिहास में एक भी व्यक्ति ऐसा न हुआ, जिसने बिना खून खराबे के इतनी बड़ी संख्या में राज्यों का एकीकरण करने का साहस किया हो।

जहां तक कश्मीर का प्रश्न है, इसे पंडित नेहरू ने स्वयं अपने अधिकार में ले लिया था। परंतु सरदार पटेल कश्मीर में जनमत संग्रह के मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र में ले जाने पर असहमत थे। गांधी जी ने सरदार पटेल को इन रियासतों के बारे में लिखा था, "रियासतों की समस्या इतनी जटिल थी, जिसे केवल तुम ही हल कर सकते थे"।

यद्यपि विदेश विभाग नेहरू जी का कार्यक्षेत्र था। पर कई बार उप प्रधानमंत्री होने के नाते विदेश समिति की कैबिनेट में उनका जाना होता था। उनकी दूरदर्शिता का लाभ यदि उस समय लिया जाता, तो अनेक वर्तमान समस्याओं का जन्म न हुआ होता।

1950 में पंडित नेहरू को लिखे एक पत्र में पटेल जी ने चीन तथा उसकी तिब्बत के प्रति नीति से सावधान किया था। कि "चीन का रवैया विश्वासघाती है।" उन्होंने यह भी लिखा था कि तिब्बत पर चीन का कब्जा नई समस्याओं को जन्म देगा। नेपाल के संदर्भ में लिखे पत्रों से भी पंडित नेहरू सहमत थे।

गोवा की स्वतंत्रता के संबंध में कैबिनेट वार्ता सुनने के पश्चात सरदार पटेल ने केवल इतना कहा : "क्या हम गोवा जाएंगे केवल दो घंटे की बात है"। नेहरू इससे बड़े नाराज हुए थे। यदि पटेल जी की बात मानी गई होती, तो 1961 तक गोआ को आजादी की प्रतीक्षा न करनी पड़ती।

सरदार पटेल जहां पाकिस्तान की चालाकीपूर्ण चालों से सतर्क थे, वहीं देश के विघटनकारी तत्वों से भी सावधान करते थे। यदि पटेल जी की बात मानी जाती, तो कश्मीर, चीन, तिब्बत, नेपाल के हालात आज जैसे न होते। उनमें छत्रपति शिवाजी महाराज जैसी कूटनीति तथा दूरदर्शिता थी। वे केवल सरदार ही नहीं, बल्कि भारत के हृदय के भी सरदार थे।

अब कुछ बातें बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर और सरदार पटेल जी के बीच संबंधों के बारे में भी कर लेते हैं। भंडारा, महाराष्ट्र से चुनाव हारने के बाद, बंगाल के नोआखाली क्षेत्र : जैसोर, खुलना, बोरीसाल और फरीदपुर से चुने गए, जोगेंद्र नाथ मंडल ने डॉ. अंबेडकर को संविधान सभा में पहुंचाने के लिए त्याग पत्र दे दिया। और 20 जुलाई 1946 को मुस्लिम लीग के सहयोग से डॉ. अंबेडकर विजयी होकर संविधान सभा में पहुंच गए। किंतू बाद में सरकार ने विभाजन में नोआखाली को पूर्वी पाकिस्तान में देने का निश्चय कर लिया। जबकि वहां पर मुस्लिम आबादी लगभग 45% ही थी। अब डॉ. अंबेडकर के समक्ष एक नई समस्या खड़ी हो गई।
ऐसी स्थिति में डॉक्टर अंबेडकर और सरदार पटेल एक दूसरे के निकट आये। और मुंबई से एम. आर. जयकर का त्यागपत्र दिलाकर, डॉ. अंबेडकर को चुनाव जिताकर संविधान सभा में लाकर प्रारूप समिति का अध्यक्ष बनवाया। और बाद में विधि मंत्री बनने में भी सहयोग

किया। एस. निजलिंगप्पा के अनुसार : सरदार पटेल ने उनसे कहा था, कि भारतवर्ष का सर्वप्रथम कानून बनाने वाले मनु थे, जो ब्राह्मण थे। किंतु वे चाहते हैं, कि स्वतंत्र भारत के संविधान की संरचना एक शूद्र द्वारा की जाये।

सरदार पटेल की डा. अंबेडकर से बातचीत जारी रही। जबकि गांधी जी को सरदार पटेल द्वारा समझौते में जोखिम दिखाई दे रहा था। सरदार पटेल कम से कम इतनी बात तो जानते ही थे, कि अंबेडकर ने कभी मुसलमान या ईसाई बनने की बात नहीं की। जैसाकि आगे चलकर उन्होंने 14 अक्टूबर 1956 को बौद्ध धम्म की दीक्षा ली। जोकि न केवल मानवता का मार्ग है, अपितु भारत के अंदर पैदा हुआ भी है।

भिक्षु विमल कीर्ति ने लिखा है, कि अगर चुनाव होता, तो सरदार पटेल देश के पहले प्रधानमंत्री बनते। डॉ राम मनोहर लोहिया ने ठीक ही कहा : "कि बुद्धिमान शूद्र सरदार पटेल उच्च वर्गीय जवाहरलाल नेहरू से बहुत महान थे"। गांधी जी स्वयं भी कहीं न कहीं से, वर्ण श्रेष्ठता के मोह से ग्रस्त थे। अतः सरदार पटेल के अतुलनीय सहयोग से बाबासाहेब डॉ अंबेडकर संविधान सभा के लिए 23 जुलाई 1947 को निर्विरोध चुने गये। पटेल जी ने डॉ अंबेडकर को कानून मंत्री के लिए भी ज्यादा उपयुक्त समझा।

सन् 1946 से 1950 के मध्य सरदार पटेल और डॉ. अंबेडकर के बीच काफी निकटता हो गई थी। 25 अप्रैल 1948 को डॉ. अंबेडकर ने लखनऊ में जो भाषण दिया, कि "उत्तर प्रदेश में दलितों और पिछड़े वर्गों को परस्पर राजनीतिक एकता स्थापित कर सरकार बना लेने के साथ कुछ ऐसे शब्द कहे, कि : यदि पिछड़े और दलित एकता स्थापित करते हैं, तो ब्राह्मण मुख्यमंत्री भी तुम्हारे जूते के फीते बांधने में गर्व महसूस करेगा"।

इसी भाषण के विरोध स्वरूप बाबासाहेब के इस्तीफे के स्वर उठे। तब सरदार पटेल ने कहा कि मैं आपको विश्वास दिला सकता हूं, कि हममें से कोई भी नहीं चाहता कि आप सरकार छोड़ें। हिंदू कोड बिल को लेकर बाबा साहब डॉ. अंबेडकर सरदार पटेल से मिले और उनको बताया कि मैं हिंदू कोड बिल के सम्बंध में कोई भी समझौता नहीं करूंगा। इसके लिए चाहे तो आप मेरा त्याग पत्र स्वीकार कर सकते हैं। तब सरदार पटेल ने कहा : "डॉ. अंबेडकर मैं जिद्दी जरूर हूं, लेकिन मूर्ख नहीं"। और उन्होंने बाबा साहब का त्यागपत्र फाड़ दिया।

सरदार पटेल के निधन के बाद प्रधानमंत्री नेहरू और डॉ. अंबेडकर के संबंध मधुर नहीं रह सके। हरबार लोकसभा चुनाव में बाबासाहेब को कांग्रेसी उम्मीदवार से हरावाया गया। बाद में सरदार पटेल की मृत्यु के बाद हिंदू कोड बिल को लेकर त्यागपत्र देकर नेहरु के मंत्रिमंडल से बाबासाहेब अलग हो गए।

सरदार पटेल ने यद्यपि बौद्ध दर्शन की दीक्षा उस तरह नहीं ली, जैसा कि बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर ने नागपुर में ली थी। लेकिन व्यावहारिक रूप से त्रिशरण और पंचशील का उन्होंने हमेशा पालन किया। मुझे यह कहने में तनिक भी झिझक नहीं है, कि यदि सरदार पटेल कुछ वर्षों तक और जीवित रहते तो डॉ. अंबेडकर के साथ ही बौद्ध दर्शन को स्वीकार करते। बहुत ही कम और नपा तुला बोलना भी तो बौद्ध दर्शन का ही अंग है।

पटेल जी बोरसाड के एडवर्ड मेमोरियल हाईस्कूल के पहले अध्यक्ष और संस्थापक थे। इस स्कूल को अब झाबेरभाई दाजीभाई पटेल हाईस्कूल के नाम से जाना जाता है।

गुजरात के किसानों को अपना दूध बेचने के लिए दलालों का सहारा लेना पड़ता था। यह दलाल दूधवालों का बहुत शोषण करते थे। इसकी शिकायत किसानों ने सरदार पटेल से की। पप्पा ने सहायता का आश्वासन दिया और किसानों को संगठित करके सहकारी समितियों का निर्माण करवा दिया। जो आज अमूल ब्रांड के नाम से जानी जाती है।

गृह मंत्री के रूप में नागरिक सेवा आई.सी.एस. का भारतीयकरण कर इन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवाएं यानी आई.ए.एस. बनाया। अंग्रेजों की सेवा करने वालों में विश्वास भरकर उन्हें राजभक्ति से देशभक्ति की ओर मोड़ा। यदि सरदार पटेल कुछ वर्ष और जीवित रहते, तो संभवत नौकरशाही का पूर्ण कायाकल्प हो जाता।

इसी बीच अत्यधिक भागदौड़ के कारण पप्पा का स्वास्थ्य तेजी से गिरने लगा। अचानक उनको खून की खांसी हुई। जिसकी वजह से मैंने अपनी मीटिंग्स और गतिविधियां कम कर दी। और पापा के लिए व्यक्तिगत कर्मचारियों की व्यवस्था की। लेकिन दिन पर दिन उनका स्वास्थ्य गिरता ही गया। धीरे-धीरे अपना विवेक भी खोने लगे थे। दूसरे बड़े हार्टअटैक के बाद 15 दिसंबर 1950 को बिरला हाउस, मुंबई में निधन हो गया। दाह संस्कार गिरगांव चौपाटी, मुंबई में होना सुनिश्चित किया गया।

लेकिन उनकी अंतिम इच्छा थी, कि "मेरा अंतिम संस्कार एक आम आदमी की तरह किया जाए"। अतः सभी लोगों ने गिरगांव जगह बदल कर सोनापुर मरीन लाइन करवा दिया। जहां पर मां झवेरबेन और बड़े पापा विट्ठलभाई का अंतिम संस्कार हुआ था। इस समय राजगोपालाचारी, राजेंद्र प्रसाद, नेहरू जी के साथ साथ लगभग १० लाख़ लोगों ने अपने लोकप्रिय नेता को अंतिम विदाई दी।

एक हफ्ते तक पप्पा के सम्मान में राष्ट्रीय शोक रखा गया।

निरंतर संघर्षपूर्ण जीवन जीने वाले सरदार पटेल को पुस्तक रचना का अवकाश ही नहीं मिला। परंतु उनके लिखे पत्रों टिप्पणियों एवं व्याख्यानों में वृहद साहित्य उपलब्ध है।

भारत की स्वतंत्रता के लिए जितने भी आंदोलन लोह पुरुष ने किए हैं, उनमें से अधिकतर आंदोलनों में मेरा बहुत योगदान रहा है। गांधी जी की शिक्षाओं से प्रभावित होकर पढ़ाई के बाद अहमदाबाद स्थित आश्रम में रहकर राष्ट्रसेवा करती रही। मैंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। परंतु स्वतंत्र भारत में वृद्धावस्था के समय मेरे पास आवश्यक वस्तुओं का आभाव था। जबकि मैं भारत की स्वतंत्रता सेनानी और सांसद भी थी। सत्याग्रह में कठोर परिश्रम के पश्चात कारागार में भी मैंने कठोर पीड़ा सही हैं। अविवाहित रहकर आजीवन राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित रही। भारत के लिए चिंतन करते करते मेरी जीवन यात्रा 26 मार्च 1990 को कमरमसद गांव, आणंद जिला, गुजरात में समाप्त हो गई।

(इसके बाद डाइस पर आ जाना है)

अहमदाबाद के हवाई अड्डे का नामकरण सरदार वल्लभभाई पटेल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा रखा गया....
गुजरात के वल्लभ विद्यानगर में सरदार पटेल विश्वविद्यालय स्थापित किया गया।
सन् 1991 में मरणोपरांत भारतरत्न से सम्मानित किया गया।
अभी हाल ही में सरकार द्वारा एक विशालकाय मूर्ति नर्मदा गुजरात में लगाई गई है। इस स्मारक का नाम एकता की मूर्ति यानी स्टेचू ऑफ यूनिटी रखा गया है।
तो यह थी, जीवनयात्रा मणीबेन पटेल और लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की।
आप लोगों को कैसी लगी.....

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

-:समाप्त:-

सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ(उ.प्र.), दिनांक : 31.10.2020
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
संपादन : ए. के. सिंह
मोबाइल : 7355175480